

पाठ 5: नागार्जुन (यह दंतुरित मुसकान, फसल)

प्रश्न 1: बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

RBSE 2020

RBSE 2024

बच्चे की दंतुरित (नए निकले दाँतों वाली) मुसकान को देखकर कवि का मन अपार खुशी और वात्सल्य से भर जाता है। कवि को ऐसा लगता है जैसे बच्चे की यह मुसकान किसी मृतक (अत्यंत निराश) व्यक्ति में भी जान डाल सकती है। धूल से सना उसका शरीर देखकर लगता है जैसे कमल तालाब को छोड़कर झोपड़ी में खिल गया हो। इस मुसकान को देखकर कठोर पत्थर भी पिघल सकता है।

प्रश्न 2: बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

RBSE 2022

बच्चे की मुसकान **निश्चल, स्वाभाविक और मासूम** होती है, उसमें कोई स्वार्थ या बनावट नहीं होती। यह मुसकान हर किसी का दिल जीत लेती है। इसके विपरीत, बड़े व्यक्ति की मुसकान में अक्सर **स्वार्थ, बनावट और औपचारिकता** छिपी होती है। बड़ों की मुसकान परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

प्रश्न 3: 'फसल' को हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

RBSE 2025

Most Important

फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा' कहकर कवि **किसानों के कठोर परिश्रम को सम्मान** दे रहा है। प्राकृतिक तत्व (जैसे धूप, पानी, मिट्टी, हवा) अकेले फसल पैदा नहीं कर सकते। जब तक लाखों किसानों और मज़दूरों के हाथों की मेहनत (स्पर्श) इन तत्वों के साथ नहीं जुड़ती, तब तक बीज फसल का रूप नहीं ले सकता। अतः फसल किसानों के पसीने का ही गौरव (गरिमा) है।

प्रश्न 4: कवि के अनुसार 'फसल' क्या है?

RBSE 2023

RBSE 2026

कवि के अनुसार, फसल कोई स्वतंत्र वस्तु नहीं है। यह नदियों के पानी का जादू है, लाखों किसानों के हाथों की मेहनत का परिणाम है, विभिन्न प्रकार की मिट्टियों के गुणधर्मों का मिला-जुला रूप है, सूरज की किरणों का परिवर्तित रूप है, और हवा की थिरकन का सिमटा हुआ रूप है। इन सभी के सामूहिक प्रभाव से ही फसल तैयार होती है।

Scholarbit